‘‘पारंपरिंक भारतीय शिक्षा प्रणाली के साथ विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली का एकीकरण‘‘

‘‘बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ‘‘
Estd. 2008

शोध प्रारूप

निर्देशिका
डॉ. मंजू शर्मा

शोधकर्त्री
लक्ष्मी गुप्ता
शिक्षा संकाय

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय
जयपुर

विषय सूची

क्रमांक सं.	विषय
1	प्रस्तावना
2	समस्या का औचित्य
3	संबंधित साहित्य का अध्ययन
4	शोध शीर्षक
5	शोध के उद्देश्य
6	शोध की परिकल्पना
7	न्यादर्श
8	शोधविधि
9	शोध उपकरण
10	सांख्यिकी विधियाँ
11	सीमांकन
12	संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

"पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के साथ विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली का एकीकरण"

1. प्रस्तावना

डा. ए. एस अलतेकर- "वैदिक युग से लेकर आज तक भारत में शिक्षा का मूल तात्पर्य यह रहा है कि ''शिक्षा प्रकाश का वह स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शक करती है।" डॉ राधाकृष्णन ''शिक्षा व्यक्ति और समाज के सर्वतोन्मुखी विकास की सशक्त प्रक्रिया है" वैदिक कालीन शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके लिए व्यापक दृष्किोण से अवधि की सीमा निश्चित नही थी शिक्षा में आयु के साथ–साथ समानांतर चलती थी वैदिक कालीन शिक्षा में कक्षा, वर्ग का महत्व नही था इसमे जीवन, राजनीतिक सामाजिक, संगीत आदि पर आधारित शिक्षा थी।

आधुनिक शिक्षा को कक्षा, वर्ग अथवा आयु पर वर्गीकृत किया गया है। शिक्षा व्यक्ति का सार्वागीण विकास करने वाली प्रक्रिया के रूप में स्वीकार की जाती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिससे शिक्षा की अनिवार्यता सिद्ध होती है, शिक्षा समाज में चलने वाली सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियो का विकास, ज्ञान एंव कौशल में वृद्धि तथा मानव व्यवहार में परिवर्तन लाया जाता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य को सभ्य सुसस्कृत एंव योग्य नागरिक बनाया जाता है। इस प्रकार शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है ओर इसी के द्वारा व्यक्ति, समाज व राष्ट्र सभी का विकास होता है।

पारंपरिक शिक्षा को प्रथागत शिक्षा भी कहा जात है जिसका मुख्य उद्देश्य नैतिक मूल्यों, शिष्टाचारो, विभिन्न कौशलो का विकास करना है इसमे छात्र उस समाज के रीति रिवाजो को सीखता है जिसमे वह रहता है यह शिक्षा मौखिक पाठ के द्वारा दी जाती है, छात्र एक पेड के नीचे गुरूकुल में बैठते है और गुरू का उपदेश सुनते है, इसमें परंपरा धर्म के बारे में ही ज्ञान शामिल था परंपरागत

शिक्षा प्रणाली न तो पुस्तकीय ज्ञान का पर्यायवाची माना गया और नही जीविकोपार्जन का साधन वरन शिक्षा को वह प्रकाश माना गया जो व्यक्ति को अपना सर्वांगीण विकास करके उतम जीवन व्यतीत करने और मोक्ष प्राप्त करने मे सहायता प्रदान करना था परंपरागत शिक्षा मे शिक्षा शब्द का प्रयोग विद्या, ज्ञान, बोध और विनय आदि अनेक अर्थो में लिया जाता था।

रवीन्द्रनाथ टैगोर– "भारत के वनो मे सभ्यता की जो धारा प्रवाहित हुई उसने सम्पूर्ण भारत को आप्लावित कर दिया"

परंपरागत भारतीय शिक्षा की मुख्य विशेषता गुरूकुल प्रणाली थी, गुरूकुल सुन्दर प्राकृत स्थान मे ग्राम या नगर के निकट होते थे परंपरागत शिक्षण विधियां प्रवचन व व्याख्यान विधि थे ये प्रायः मौखिक ही होते थे, उसके मुख्य अंग थे भ्रमण, मनन चिंतन, स्वाध्याय और पुनरावृति

परंपरागत भारतीय शिक्षा में छात्रों की दिनचर्या व्यवस्थित थी ब्रहम मुहुर्त मे उठकर नित्य कार्य करते थे और केवल दो बार ही भोजन ग्रहण करते थे इस शिक्षा प्रणाली में आचार व्यवहार पर अत्यधिक बल दिया जाता था और विद्यार्थियो को मार्यादा, शिष्टाचार, आत्यसंयम के नियमो का पालन करने के आदेश थेः वे काम, क्रोध, व लोभ और दूषित विचारो से मुक्त रहकर ब्रह्मचार्य व्रत का पालन करते थे

परंपरागत भारतीय शिक्षा की सर्वश्रेष्ठ विशेषता गुरू शिष्य संबंध थे, छात्र अपने गुरू का हृदय से सम्मान करते थे, आचार्य सेवा उनका प्रथम कर्तव्य था, शिक्षक भी छात्र को अपने पुत्र के समान मानते थे व उनका शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास करने की सदैव प्रयत्न करते थे,

2. अध्ययन का औचित्य

आधुनिक शिक्षा प्रणाली प्रभावी है लेकिन परंपरागत व आधुनिक शिक्षा प्रणालियों का एकीकरण करने की जरूरत है आज के वातावरण मे हमे गुरूकुल को समझने की जरूरत है कि वह कैसे काम करता है यह सिर्फ अतीत को जानने के लिए ही नही है दोनो शिक्षा प्रणाली का समन्वय होना अनिवार्य

है छात्रों ने इस प्रणाली के जरिए शिक्षा के साथ सुसंस्कृत और अनुशासित जीवन जीने के लिए आवश्यक पहलुओ को भी पढाया गया था, छात्र मिलकर गुरूकुल की छत के नीचे रहते थे और वहां एक अच्छा मानवता प्रेम ओर अनुशासन था, आज का छात्र कल का भविष्य है इसी बात को ध्यान मे रखकर शिक्षण को ओर अधिक रूचिकर बनाने के लिए, शिक्षा मे परिवर्तन एवं परियोजन करना अनिवार्य है। शिक्षा, पाठ्यक्रमः शिक्षण में परिवर्तन एंव परियोर्जन करना अनिवार्य है। शिक्षा, पाठ्यक्रम शिक्षणविधियो शिक्षा में नवीन प्रयोग, नवीन शिक्षण पद्वतियों को अपनाकर व्यक्ति को भविष्य की चुनौतियो पर विजय प्राप्त करके सक्षम बनाया जा सकता है।

वर्तमान युग तकनीकी का युग है अतः शिक्षा जगत में तकनीकी की उपयोगिता स्वीकार की गई है विद्यार्थियो को शिक्षित करने हेतु कम्प्यूटर एक उपयोगी साधन सिद्व हो चुका है इसकी उपयोगिता को देखते हुए विद्यार्थियो को परम्परागत शिक्षा प्रणाली के अतिरिक्त प्रभावी व रोचक तरीको से अध्यापन करवाया जाता है जिससे विद्यार्थियो को नई जानकारी प्राप्त हो सके।

3. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

1. पंडा, भारत कुमार (2019) प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की वर्तमान समय में नैमित्रिकता। उपर्युक्त शोध अध्ययन में शोधकर्ता का मानना है कि आज आधुनिक समाज में शिक्षा, समाज, संस्कृति और देश की भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार बदलती रही है। किन्तु आज हमारी शिक्षा का अर्थ किसी स्कूल, कॉलेज या विश्वविद्यालय में जाकर विभिन्न विषयों की दस वीं, की पुस्तके अध्यापकों से पढ़ लेना ही है, लेकिन हमारी प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था ऐसी नहीं थी उसमें विद्यार्थियों को केवल एक ही शिक्षा नही दी जाती थी बल्कि उन्हें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक शक्तियों के विकास की शिक्षा भी दी जाती थी।

उदेश्य : 1. प्राचीन व आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. प्राचीन व आधुनिक शिक्षा में विकास के विभिन्न आयोजन का अध्ययन करना।

इस अध्ययन का निष्कर्ष यह पाया गया कि वर्तमान वैज्ञानिक युग में ऋषियों के किसी गुरूकुलोकी स्थापना हो सकना असंभव है। वर्तमान स्कूलो तथा कॉलेजो का सर्वथा उच्छेद हो सकना तो संभव नही पर उनका रूपांतर होना अत्यन्त आवश्यक है और उनमें प्राचीन शिक्षा पद्धति की उपयोगी बातो का समावेश करने से बहुत अधिक लाभ उठाया जा सकता है। इस तरह हम इस नतीजे पर पहुंचते है कि प्राचीन शिक्षा पद्धति तथा देशकाल की वर्तमान बदली हुई परिस्थिति में ठीक उसी तरह नही लागू की जा सकती है किन्तु उनमें कुछ परिवर्तन करके उससे लागू किया जाए तो हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति और लाभकारी हो सकती है।

2. दास, गणेश (2018) वर्तमान भारत में शिक्षा की दशा उपयुक्त शोध अध्ययन में शोधकर्ता और दिशा का मानना है कि शिक्षा केवल काम चलाऊ वस्तु नहीं है। यह केवल परीक्षा पास करने का माध्यम न हो वरन हमे भली प्रकार जीना सिखायें, विद्या वही है जो हमें इस दुनिया की चिन्ता से मुक्त करके हमारी जीवन नैया को भवसागर से पार लगाने में समर्थ हो 'स विद्या' या विभुक्तये'।

उदेदश्य : वर्तमान भारत में शिक्षा की दशा का अध्ययन करना।

वर्तमान भारतीय शिक्षा में व्यक्तितव विकास में आयामों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष : इस अध्ययन का निष्कर्ष यह पाया गया कि हमें शिक्षा में ऐसे पाठ्यक्रम की जरूरत है जो बच्चों में मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक संवेदनशीलता और समानता का विकसित करें।

परीक्षाओं का संचालन एवं नियंत्रण इस प्रकार हो कि विद्यार्थी निर्भय होकर उत्साह से परीक्षा में बैठ।

3. सिन्हा, आकांश (2018) ''प्राचीन और आधुनिक विद्यार्थी जीवन के आनन्द पर अध्ययन''

उपर्युक्त शोध अध्ययन में प्राचीन काल में विद्यार्थी के जीवन को चार आश्रमों में बांटा गया था, जीवन में विद्यारम्भ पूजन समारोह के साथ होता था।

उदेदश्य - प्राचीन और आधुनिक विद्यार्थी जीवन में अनुशासक का अध्ययन करना। प्राचीन और आधुनिक विद्यार्थी जीवन में संवेगात्मक विकास का अध्ययन करना।

निष्कर्ष - आज का विद्यार्थी प्राचीनकाल के आदर्श और अनुशासन को भूल चुका है आज ब्रह्मचार्य का पालन भी नहीं किया जाता। स्कूलों और कॉलेजों में धार्मिक और नैतिक शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं की जाती है। जिनके सहारे विद्यार्थियों के चरित्र को उज्जवल बनाया जा सके।

4. पाल, कुलबिन्दर (2019) शैक्षिक व्यवस्था का विकास।

उदेदश्य -1. विद्यार्थियों को भारत में शिक्षा की प्राचीन, मध्यकालीन तथा ब्रिटिश प्रणाली की विशिष्टताओं उसकी शक्तियों तथा सीमाओं की जानकारी उपलब्ध करवाना।

2. विद्यार्थियों को स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय शिक्षा के विकास से अवगत करवाना।

निष्कर्ष - प्राथमिक शिक्षा का आरम्भ 5 वर्ष की आयु में विद्यारम्भ संस्कार से होता था और सभी जातियों के बालकों के लिए अनिवार्य था। इसका अभिप्राय यह है कि सभी जातियों के बालक प्राथमिक शिक्षा ग्रहण कर सकते थे। उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार केवल ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों को था, इन जातियों के बालक सामान्यः क्रमशः 8, 11 और 12 वर्ष की आयु में शिक्षा संस्था में प्रवेश करते थे।

5. गुर्जर, गोपाल (2019) वैदिक कालीन अध्ययन व्यवस्था की वर्तमान प्रासंगिकता : एक शिक्षा शास्त्रीय मीमांसा।

उदेदश्य - आध्यात्मिकता के क्षेत्र में वेदों के अध्ययन की उपयोगिकता का अध्ययन करना। नैतिकता के क्षेत्र में वेदों के अध्ययन की उपयोगिकता का अध्ययन करना।

निष्कर्ष - वैदिक कालीन शिक्षा की अनेक विशेषताओं वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है। वैदिक शिक्षा के उददेश्य, छात्र–अध्यापक संबंध, अनुशासन व्यवस्था, उपनयन संस्कार की अनिवार्यता, समावर्तन उपदेश तथा विनयशीलता, नैतिक चरित्र, कार्य अनुभव व गुरू को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समाहित करके अनेक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

6. अचल, अंशु (2019) पारंपरिक शिक्षा प्रणाली बनाम आधुनिक शिक्षा प्रणाली : भारतीय शिक्षा प्रणाली संदर्भ।

उदेदश्य - पारंपरिक शिक्षा प्रणाली व आधुनिक शिक्षा प्रणाली का अध्ययन करना। पारपरिक शिक्षा व आधुनिक शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष - यह पता लगाना मुश्किल है कि कौनसी शिक्षा बेहतर है। दोनो प्रकार की शिक्षा का अपना महत्व है। दोनों प्रकार की शिक्षा एक दूसरे के समान भी है और भिन्न भी है। आधुनिक शिक्षा पांरपरिक शिक्षा से विरासत में मिली है। लेकिन आधुनिक शिक्षा के कारण पारंपरिक शिक्षा की उपेक्षा की जा रही है जिससे हमारी संस्कृति नष्ट हो रही है इसलिए दोनों ही शिक्षा प्रणालियों को समान महत्व दिया जाना चाहिए।

7. गौतम वर्षा (2018) स्वामी दयानन्द सरस्वती : आधुनिक भारतीय शैक्षिक व्यवस्था की समालोचना और आधुनिक भारतीय शिक्षा का स्वरूप''

उदेदश्य - आधुनिक भारतीय शैक्षिक व्यवस्था की आवासीय व्यवस्था का अध्ययन करना। आधुनिक भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में नैतिक शिक्षा का अध्ययन करना।

निष्कर्ष - 'इस अध्ययन के निष्कर्ष में यह पाया गया कि जिस गुरूकुल पद्धति की स्थापना स्वामीजी ने वर्षो पहले की थी। वर्तमान के आवासीय विद्यालय उस गुरूकुल पद्धति का ही प्रतिरूप है।

4. शोध शीर्षक

"पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के साथ विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली का एकीकरण"

5. शोध के उद्देश्य

1. पारंपरिक भारतीय शिक्षण प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षिणिक प्रणाली में विकास के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना।

   (क) वैज्ञानिक आयाम

   (ख) आध्यात्मिक आयाम

   (ग) सामजिक आयाम

2. पारंपरिक भारतीय शिक्षण प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली में विभिन्न शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करना।

   (1) गुरूकुल – आवासीय व्यवस्था

   (2) शिक्षक शिक्षार्थी संबंध

   (3) अनुशासन

   (4) योग शिक्षा

   (5) वेशभूषा

3. पारंपरिक भारतीय शिक्षण प्रणाली व विश्वविद्यालय प्रणाली में पाठ्यक्रम का अध्ययन करना।
4. पारंपरिक भारतीय शिक्षण प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली में मूल्यांकन प्रणाली का अध्ययन करना।

5. पारंपरिक शिक्षण प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली में विभिन्न शिक्षण विधियाँ का अध्ययन करना।

6. पारंपरिक शिक्षण प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली में विभिन्न मूल्यों का अध्ययन करना।

6. शोध की परिकल्पना

1. पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षिणिक प्रणाली में विकास के विभिन्न आयामो में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाएगा।

2. पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणली की शिक्षा व्यवस्था मे कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाएगा।

3. पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली मे पाठ्यक्रम मे कोई सार्थक अंतर नही पाया जाएगा।

4. पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली में मूल्यांकन प्रणाली मे काई सार्थक अंतर नही पाया जाएगा।

5. पारंपरिक शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली में विभिन्न विधियॉ मे कोई सार्थक अंतर नही पाया जाएगा।

6. पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिय प्रणाली मे विभिन्न मूल्यॉ में कोई सार्थक अंतर नही पाया जाएगा।

7. न्यादर्श

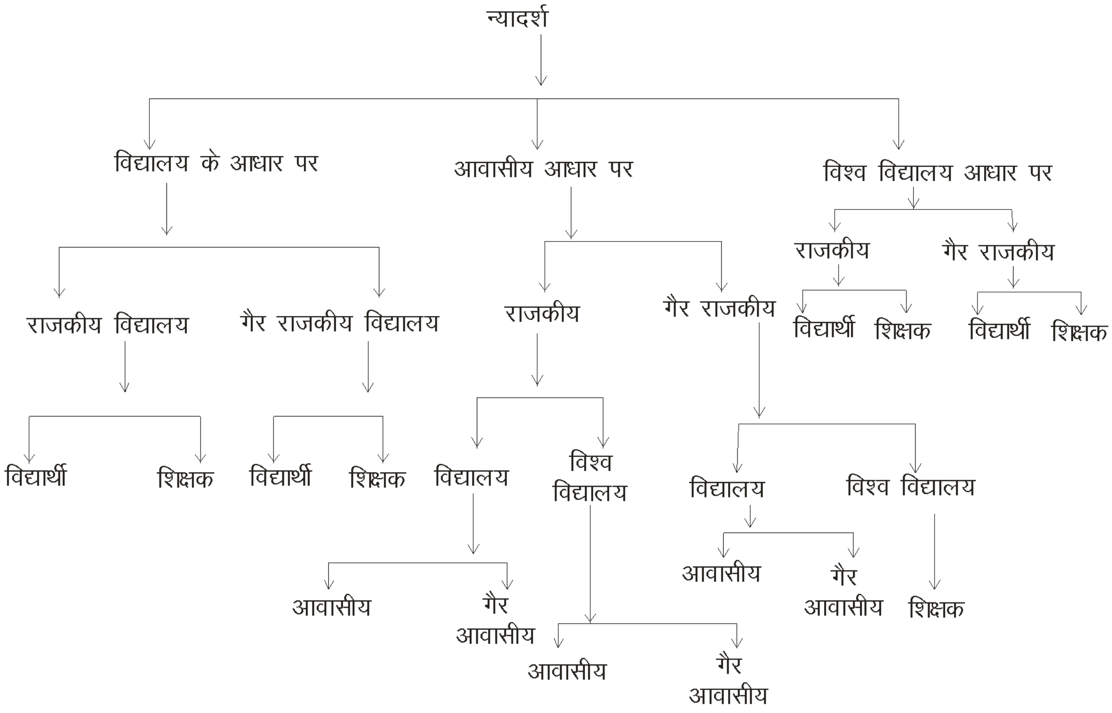

8. **शोधविधि** : सर्वेक्षण आधारित शोध विधि।

9. **शोध उपकरण** : स्वयं निर्मित प्रश्नावली।

10. शोध हेतु सांख्यिकी विधियाँ

प्रस्ताविक शोध प्रबन्ध में आंकड़ों के विश्लेषण हेतु टी–अनुपात सांख्यिकी, Mean, SD विधि का प्रयोग किया जाएगा।

11. सीमांकन

1. प्रस्तावित शोध में केवल राजस्थान राज्य के विद्यालय व विश्वविद्यालयों का अध्ययन हेतु चयन किया जाएगा।

2. प्रस्तावित शोध में केवल राजस्थान राज्य के शिक्षक शिक्षार्थी का अध्ययन हेतु चुनाव किया जाएगा।

12. संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्यागी, गुरूसरन दास (2005) : भारत में शिक्षा का विकास, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. पाठक, जौहरी (2005) : भारतीय शिक्षा का इतिहास, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. त्यागी, गुरूसरन दास (2005) : भारतीय शिक्षा का परिदृश्य, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
4. राजपूत, जगमोहन सिंह (2000) : स्कूल शिक्षा के संदर्भ भारतीय आधुनिक शिक्षा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
5. सिंह, रामपाल (2005) : शिक्षा तथा उदीयमान भारतीय समाज, मन्दिर, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. सिंह, उमा (2001) : उदीपमान भारतीय समाज में शिक्षा, साहित्यागार।
7. पाण्डे, रामशक्ल (2004) : भारत में शिक्षा का सिद्वान्त राज पब्लिक हाऊस, आगरा।